

DPN 5338

Title: विजयामृतः योगज्ञानम्

Run. No. 6029

Cat. No. 55-8

Micro. No.

Subject योग शास्त्र Yoga Śāstra Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Sans - nep / Translation /

Size in cms. 24 x 10.5 Folios 12 Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl. Chapt. / act /

Author / translator Rāmananda Svāmī

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1994

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

402

॥ अथ विद्यामृतयोगज्ञानम् ॥ अनभवि ॥

Vijayamrta-yogajñāna

25

॥१॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ कैलास परमानंदः सिवहृषो नमोऽस्वहि ॥
 अभिधेय प्रमोक्षाणी तत्त्वज्ञान प्रकाशते ॥ १ ॥ कैलास पर्वत विद्येय
 कात्तमाः सिवशक्ती स्वहृले आनन्दभावस्याकाङ्क्षो ॥ पार्वतिलेहात्तजोऽपि
 त्रिगर्हीन् ॥ हे प्रभु जगदिस्वरः ॥ यो कल्पनाहपि संसारदेधि कुन कृयादेः
 धिमोक्षे कुंछः तेस्मोक्षकृन्त्या तत्त्वज्ञान मलाई आशा हो सभनि विनिगर्दी
 सदा सिवले तत्त्वज्ञान को प्रकृति आशा गर्नु कुंछ ॥ सदा सिव डुवाव ॥ १ ॥
 नामहपोविहिनस्तुः सर्वहि नो सोहपकंम् ॥ तत्त्वप्रध्यायये योगी पूर्णवुं
 स्वहृपिनि ॥ २ ॥ पंचभुतोदिसकलनामहपले रहित भयाका आकारप
 विनभयाका आकास समानः अनिर्वचनियहृप आत्मा को ध्यान गर्दी नामो

15

10

5

शे कुंछ सगुन का ध्यान ले सगुणै मा प्राप्ति कुंछ ॥ तस अर्थ योगी ज्ञानि मुनि
 हृह जोछः निर्गुण निर्णकार का ध्यान वाट मुक्त कृन गया का छनः निर्गुन देधि
 वाहेकः सगुन वाट मुक्त छैन ॥ भनिसिव आशा गर्छन कि ॥ निर्गुण वंस्स को
 ध्यान कस एि गर्नु भनोला तसुनहे पार्वति ॥ २ ॥ नमसिवाय गुरुदेव नमो
 दु कलात्मने ॥ निरंजन पद यात्रि नित्य यत्र पश्यन् ॥ ३ ॥ सिवहृप नाद
 विन्दु कलाहृप जोछ आत्माहृप कृन् ॥ सो आत्माहृप गुरु को नमस्कार गहि
 नित्य जो ध्यान गर्लाः तेस योगीले सुद्वुल्लासा जो छिहृप को दर्शन पाईः अवसे
 मोक्षे कृना कन जीछ ॥ आत्माहृपि नादः विंदुः कला को प्रकृति जोछ ॥ कासिका
 घण्टा का प्रमान हैः अनुराग नन सखलाई नोद भैछ ॥ तेस नाद का अन

0

cms.

5

10

15

20

25

30

उर्ध्वमुखि

॥२॥

नर अनुस्वाह भंवाधोनि उच्छ्रुत् ॥ ते सधोनि लाई विंदु भंछ ॥ ते सधोनि वाट
चंद्रकला जे व्यापक रूप भै प्रकाशने जोरि सो पलाई कला भंछ ॥ ते सकला रूप
आत्मा लाई उपाधिरहित भयाका एकागुचित कदा मात्र अन्नसर्कण मन ज्ञान
ले मात्रिद संपाईने कुन आत्मा तिने कुन ॥ उपाधिले सहित भयाका विसयक
पना गीया का मन ले देधी सकनु छैन ॥ जसै मेघले नधा किं दामा चंद्र भु
र्ये लाई प्रकाश मा भै देख्य छ ॥ मेघले धाकि दि दामा चंद्र भुर्ये लाई प्रका
समान देख्यैन ॥ तसै मेघ हवी उपाधी कुन भनि जान ॥ उपाधी भंनु जो छ प
चभुत दस ईंद्रीय मन यति लाई स्वह उपाधी भंछ ॥ ईने पद सोह उपा
धिलाई नजिति आत्मा दर्शन कुदेन ॥ आत्मा दर्शन भै मोक्षे छैन भनिसदा

सिब आजा गछ ॥ ३ ॥ गृहे स्थितान पृथग् वैश्व वायस न्यासनी ॥ ईदं
~~चा अमाशितासक्तिमने सात्रीये चाक्रम ॥ ४ ॥ यो भवसे सारमा जो जति~~
शासु छ जो जतिकर्म छ सो सबै जो छ मनै सात्रगर्ना निमित्त कुन ॥ मन सो
न भो भने कोन कर्म गर्नु पदै ॥ ते जे जो छ सबै धर्म कर्म गणिसके गृहे
शिवाण पृथु बुंल चर्जे संन्यास आदिकर्म गणिसके ॥ मन बोधन भया
संम ते जे जो छ सबै धर्म कर्म चार आश्रम गणिसक्या को भयापनि
कोन कर्म ग्या को छैन नरप मुतिने कुन ॥ तस अर्थ ज्ञानिस जन ह
ले जसाहि सापले गर्मन बोध कु छ तसै प्रकार ले गणि मन बोध गन्या
उपाय गर्नु गृह बाहि या कार पनि मनै बोध गर्ना निमित्त कुन ॥

मनबोधनभैः आत्मादेष्टैः नः आत्मानविहि मोक्षे कुर्ये न भनिमिव आ
 जागर्हन् ॥ ४ ॥ पंचभुत मयं वृत्तः वृत्तयुक्तो मयं जगत् ॥ नीलतेज
 ॥ ३ ॥ समो युक्तः युक्तं घृतं पयोदधी ॥ ५ ॥ पंचभुत मयं वृत्तं घृतं वृत्तमय
 पंचभुतं कुरुः अहं केहि ह्येनः ॥ जलैः दुदः दहिमाः घ्युः मिल्पोका ह्युः तिलमा
 तेलरत्नाका ह्युः ॥ तलैः पंचभुतमापनिर्वृत्तयापक ह्युः ॥ जलैः दुदः दहिमा
 घ्युः तिलमातेलः तत्त्वलेगरी निष्कं ह्युः ॥ उल्लैः तत्त्वलेगरी आत्मा ज्योतिः प्रकाश
 कं ह्युः ॥ ५ ॥ द्विद्वेनः अंगुष्ठाणी तादनाहूपसंयुत ॥ तस्यै हूपस्य वृत्तस्यै
आत्मा नृपुति साधकं ॥ ६ ॥ पंचभुतले रहितं भयाकाः कलौः प्रकृति
 को ज्योतिः प्रकाशकं ह्युः कुरुयाते ह्युः भयासुन ॥

५४
 दुई हात को अंगुष्ठां ले दुई कर्णों को छिद्रों कुरुः दुई तर्जनी अंगुष्ठां ले दुवै ग
 लाई रोकनु ॥ दुई मध्यमा अंगुष्ठां ले दुवै नासिका पुतरों कुरुः दुई अना
 मिकाः कनिष्ठ अंगुष्ठां ले जो ह्युः चकारः पंथिः सके वितिके मुख कनधा क
 नुः मनलाई भकुटि मालगाई दसजीं य अचल भैः कुं भक मुंगरी हेदीमा
 कुरु प्रकृति को ज्योति देष नुजीं ह्ये ते सै प्रकृतिलाई आत्मा ज्योति हूप कुरु भ
 निः योगी ह ह भं द ह्युः ॥ तस्य प्रकृतिलाई त्याग देखाई दीनु ता मेरे सम
 र्थ ह्येन आफैले अनुभव गरी हे नुरुः आफै थाहा होई जाई ॥ यो घनमुख मुंदा
 कुरु वक्रत गुप्ता घाले सिध कुरु भनिमिव आजागर्हन् ॥ अर्थात् भावा
 अर्थ यो कुरु किः दुई हात का अंगुष्ठां ले दुई नेत्र लाई केहि वेर सिध

25

मारिहेहीमात्रसोपुक्रतिदेघनुजीहः ॥ **वृत्तस्वरूपनिउल्लेखेनभनिःजीनु**
 ॥ **यस्यमुधिमुद्राकोआचारपनिमुन** ॥ एकातस्थलमाकोमलवक्ष्यानमा
 ॥ ४ ॥ **मुखासनवाधिः ॥** सिवशक्तीकोअमलवनगएअल्पाहाएभैःखमुधिमुद्रा
 माअभ्यासगघुनुरःआत्माजोतितकालैःदेखीहःतेसैमातयगर्नुहपु
 र्णाआत्मापुकासकुंछभनिःअनभवि योगीहहभैछनः ॥ **पुर्णावृत्तहपको**
 दर्शनपायापद्धिःमनकोविसयकल्पनाःकुर्तिदेजीहःदर्शनभयासैमःकल्पना
 लेरहितकुदेन ॥ खानामाजोहःगुनक्रयापोसक्रयाःआफुलार्डःवधीयाक्रयाव
 लुःआधापेतभन्योमात्रीघानु ॥ **तितोःपिरोःअमिलोनुरैकोःवक्रतःतातोःयति**
 जोहअभ्यासकालमानघानुभनिःअनुभावियोगीहहभैछनः ॥ ६ ॥ **यकीहियो**

15

10

5

निमुद्राणां **पुरश्चर्यादुसंपर्ल ॥ चकारोपथतेमिर्तेकोतियसफललभे**
तु ॥ ७ ॥ दिनकोयकघडीमात्रसीभविमुद्रामालकुडाःदसुफेगपुरश्च
 र्णागयाकाफकुंछ ॥ **चकारस्मेतुगएयकघडीसांभविमुद्रामालयगदीमा**
कोटिअस्वमेधयसगयाकाफलमिल ॥ भनिसिवआज्ञागछन ॥ ७ ॥ च
कारेवृत्तश्चिनां चकारविष्णुपालनी ॥ चकारसंहारकर्ताचःचकारवृ
त्तहपनं ॥ ८ ॥ चकारकोअभ्यासलेवृत्तालेश्चिगयाकाछनःविष्णुले
 पालनागयाकाछनःहदुलेसंहारगरेकाकुन ॥ **त्रिगुणाडीअनेकतत्त्वप**
निचकारैलेखिगेगीपुकासभयाकाछन ॥ सर्वकर्मकोसिधीपनिच
कारैदेखीकुंछन ॥ चकारजोहवृत्तैहपक्रन ॥ ९ ॥ हकारश्चःसकारेनः

0

cms.

5

10

15

20

25

30

25

॥५॥

एककारं चकारयत् ॥ चकारे पंथ ते नित्यः आत्मा योऽपि पुंभास्कर ॥ ६ ॥ जश्ने
 हकारसकारलाई एकगणि चकारमात्रयगर्ह ॥ चकारमात्रयगर्हले जोछः सुर्य
 समानः अहणोदयहपजसे आत्माहपः पुकासः पयदेमिछ ॥ नित्यतेस आत्मा
 कोहपकोदस नृगर्हले तेसुगीस्वरलाई कोनदुखः पलाः ॥ तेसायोगीस्वरलाई
 जिवन्मुक्तीभोभनाले कोन आसर्ज्यछी नहु मुक्तैछ नृकतिवयानृगर्ह ॥ ६ ॥
 माहानादेलयं पुाहुर्मनसा कल्पनासयो ॥ सर्वपापक्षेयं यानि संयमिस्थित
 कुण्डलि ॥ १० ॥ वदावदां यमिहहजोछनः सदासर्वदाः माहानादकालयमा
 गतीकुण्डलिनिजगर्ह मनकोकल्पनाहितभयाकाछे ॥ वहुत आनन्द
 कालयमाविआमृगणिरह्याकाङ्क्षिछन ॥ मनकल्पनाजोछ जसे अग्नीलेबाहद

15

10

5

0

Cms.

5

10

15

20

25

30

लाईउडाउछनः तलेगरीः अनहदनादहपअग्नीले मनकल्पनाकोनास
 कनगरीआनन्दपदमावसछन ॥ माहानादपुकासनभै विसयकल्पनाकडा
 पिछुतिदेनः कल्पनानहुतिज्यालः बुद्धकल्पनाः हुनसकदेन ॥ तसअर्थः
 माहानादपुकासगर्हलाई सहित्कुंभकमुंदाअवस्यगर्नु ॥ यो कहिआ
 या आत्मापुकासहुयेः श्रीयार माहानादपुकटहुयाहुयाजोछ ॥ सही
 तहुभंकमुंदाहुन तसअर्थ गुहकअर्हाई भनुंभने सहीतुंभकमुंदा
 दिनुसकल्पेजोहो माहागुहभयेतिनेहुन ॥ १० ॥ नादअवगो ध्यान
 अत्रगि भुजंगमा विस्पृतेः सकलंप्राहु ॥ कुत्रदिर्नहिधावति ॥ ११ ॥
 नादअवगकाअभ्यासयोगी कोमनजोछः विसयदेयिनिवृत्तहुंछरआ

25

॥६॥

का मनः वसरावनुसमर्थं ॥ मनविलयकृतजोहनु आनंदपाछनु ॥ मन
 विलयभैगयाकास्वभावकस्तोहनुभने ॥ विलयको विसमतिः विलपदमा
 यकागुमनः लयभयाकासांतसोभावः अकीलाई निंदागर्नामाहिनभयाकोः भे
 दवुधिनभयाकोः सदासर्वदा नादे मालयगरीवस्थाकाहनु ॥११॥ मनसे
 मनधाने वः मनसाधे ~~चित्तं मन~~ ॥ मनै ~~अः सर्वभूतानां भुक्ती मुक्ती मयो~~
 ॥१२॥ यो संसारमाः अनेक कर्मगरी भुक्तगरी हिंयापनिनेः अवमुक्तीक
 नुपहु भनिमुक्ती मार्गबो जीः लागेपनिमनेः जो जतिकर्मछ त्यो ~~सबै~~ कर्म
 गर्तेमदैहनुः भनिचिनिः ॥ तेसे मनलाई मनैले चिनिः मनलाई मनैले बोध
 गरीः मनलाई मनैले थोसा मनला ~~छ~~ मनैको ध्यान गर्नुः ॥ तव आत्मा पु

15

10

5

का सदेखनु जाछ ॥ अने ^{का}त्रधानदिनाले आफुमारहे का आत्मा कसरी पुसहोला
 कृतसत्तै नः ॥ आफुमारहे का आत्मा कोः आफैले ध्यान गयामात्री पुकासहु
 छ ॥ तस अर्थः सैसारमा सबै भीटा थुलोः मोक्षे मार्गभयाकाः मनले मनैको ध्यान
 गर्नु जसो थुलो कर्म अहछे नः ॥ धनधर्म गर्नु नपर्नेः जिवलाई पिरडी नुनप
 न्याः सामाग्री पमीः केहिन चाहिने ॥ तह वाह पनिकोहि न चाहिनेः कसे
 लाई चितइखाउनु पनिनपर्थ ॥ कहै पनि जानुनपर्थ ॥ कौनै वस्तु नभयाप
 निः अकी उभने नभयाकाः ॥ यत्ने गर्नुः यत्ने नगर्नुः भयापनि नभयाका ॥
 घालिः आफु मनलाई मनैले मात्र ध्यान गयामा पुगी जाने माः ॥ उपाधीले धा
 किंदा माः त्यो कौनै कुरा कोः विवेक वुरुनुनसकि ॥ धनैः धर्म गर्नुपर्ने सरी

0

cms.

5

10

15

20

25

30

25

॥७॥

लेखपाउनुप-याः अहंकारममतावछाउनेः कर्ममाः साचोमानिः कर्मगए
 हिदेछन ॥ आफुमुक्तकृन्त्यनकृनेः केहिबीवेकविचारपनिः कोहिगदेन ॥ स
 वैकर्मगए सिधीयातापनिः मोक्षेकृनुकाहकलाई जोछः मनलेः मनैको ध्यान
 नगएः अहकर्मलेः मोक्षेकदापिछेन ॥ मनले मनैको ध्यानगनु जो होः एजयो
 गकृनु ॥ एजयोगको पुकृतिपनिः सुनाजाभनिः सिवआज्ञागछनः तसअ
 र्थज्ञानीजनले मनैको साधनागनु ॥ १२ ॥ साधकविपरीतकर्मिनिबोध
 अनियमितं ॥ उचतः समुपविष्टः सोमवेदे अर्चयामि ॥ १३ ॥ विपरीत
 कर्मिमुद्राको साधनागन्याले प्राणावायुलाई वक्रतजर्तुं कुंभकगनुः स
 रिरअलस्थिरगनु ॥ मनैमनैरेवकगनु नित्यं जनीलेः अवसेजोतिप्रकासकृ

15

10

5

॥ १३ ॥ नानाविधैर्यचारैस्तुः नसाध्ये जायते मनः ॥ तस्मान्नस्य जयः प्रायः प्राणा
 स्य जयवसि ॥ १४ ॥ नानापुकारकाविचारगणैः हेतुः मारुशास्त्रकाप्रमानुहते
 बुद्धदामोपनिः मनः सात्रकृन्त्या अहउपायः केहिदेखीयन ॥ अनेमो गिवाठ
 विचारगणैः मापनिः मनसाध्येकृनेतत्त्वकाउपायदेखीयन ॥ तसअर्थः म
 नसांतनभयासंमः प्राणासांतनभेजोदेन ॥ प्राणालाई सांतनगएः मनसा
 तकृदेन ॥ मनसांतनभेः गज्याकाः जोजतिकर्मकृत्योसवैः कर्मजोछः तसम
 नादिअनेकः दुखकासागरवातनउम्कनेकर्ममात्रीकृनुः मनवस्यभेसां
 तनभेजानेः कर्मतिहोईननु ॥ एजयोगले विनामनुबोधगनेः अहडोओ
 ज्ञानः छेदेछेन ॥ एजयोगको केहिप्रकृतिः फेरिपनिभेदछुः सुनभनिसी

0

cms.

5

10

15

20

25

30

25

॥८॥

व आजा गर्दछन् ॥ मनले मनै को ध्यान न गति अनेत्र ध्यान मा गया का मन य
का गुभया का थहर्दैन ॥ दित थहर्द ॥ मनले मनै को ध्यान माला ग्या का मन जो
छः ए का गुभया का थहर्द ॥ मनले मनै को ध्यान गर्दा मा ते सै मन देवी अन
हृद नाद सक पुका सईछन् ॥ ते सै अनहृद धोनिका नाद सक लाई जो छ ए
ज योग भईछ ॥ तस अर्थ अनहृद नाद सक मा मन लय गर्नु जो हो ॥ ए ज योग
भैनु ते हि हो ॥ ते सै ए ज योग ले मात्र मन प्राण बोध ईछ अह कर्म ते मन
बोध छैन ॥ ते सै अनहृद नाद सक लाई लय पनि भईछन् ॥ ते सै अनहृद नाद सक
मालय भया का मन लाई ए ज योग भईछन् ॥ तस अर्थ यो मन लाई अनहृद ना
द मालय गर्नु ॥ अनहृद नाद जो छ मन कै स्वप्न पड्छन् ॥ अनहृद धोनिका नाद

15

10

5

0

हृ
सक पुका सन भया का योगी होईन ॥ जव अनहृद नाद पुका सईछ ॥ तव मन वि
लय भै सांत हुने जी छै र मन आफ्रा व सईछन् ॥ तव सै सार का ईति देवी निई
ति भै आनंद पद मा पुग्न जी छ ॥ तव ते स योगी जो छ यस सै सार रूपी माया म
य स्थान दे वि छु ते ॥ मनो मणि स्थान मा पुग्न जी छन् ॥ ते स्थान देवी फेरि म
णि मुक्त रूप स्थान मा पुग्न जी छ ॥ ते सै योगी लाई जो छ जिवन् मुक्ती भनिक
हिया को छ ॥ ते स्थान मा पुग्या ई ई न्या को होला भनोलात् ॥ ते सै अनहृद
नाद सक को भैया सले गर्दा पुग्न जी छन् ॥ ते मूल य लाई समाधी भईछ ॥
यो जगत् सार लाई माया मय स्थान कहईछ ॥ द्वित दे वि र हित भया का अति
आनंद पुका सहुने चंद्र सूर्य को गमन पुकने स्थान लाई जो छ मनो मणि

Cms.

5

10

15

20

25

30

25

भेद नृ ॥ मणि मुक्त भया स्थान मा पुग्दा मा जो छः मनै मुक्त कृ ना क न जो छ
 मन मुक्त भया पछि वा कि क्पा गर्नु पर्छ ॥ भनि सदा सिव ले आशा भया छ
 नृ ॥ १४ ॥ एत योगी प माहात्म्य कि म्मा जाना तित स्वतः ॥ ज्ञानं मुक्ती स्थिति सि
 द्वि गुरु वा क्य न लब्धते ॥ १५ ॥ एत योग को वर्णना क स ले गर्नु सकै सक दे न
 यथार्थः यस्तौ ह प को कुरु भनि मै ले प नि क ह नु सक दे न हे पावति ॥ एत योग
 प्रकास कृ ने तत्त्व ज्ञानः प्रकास गर्नु ताः वि ना गुरु का व च न ले मै ले प नि ति सि
 लाई य से हो भनि प्रकास गर्नु कृ दे न अह क्पा कृ रा छ ॥ एत योग द्वारा ज्ञानः
 अर्थात् जो छः ओ फ्रा आत्मा स्व ह प को अपरोक्षः अनुभवः ओर विदेह मुक्ती
 ओर निर्विकार स्व ह प मा अवस्थिति ह पः जिव मुक्ती ॥ ओर अणि मा दि

15

10

5

0

सिद्धि यो स वै जो छः एत योगी द्वारा वार मिच्छ अह द्वारा मिच्छेन ॥ १५ ॥
 एत योग स ज्ञानं तं केवलं हृद कर्मिणा ॥ एतान् भ्यासिनो मये पूया
 स फल वर्जितान् ॥ १६ ॥ जस योगी ले एत योग लाई न सिद्धिः हथ योग
 को कृ या गर्छ नृ ॥ ते स अभ्यासिको अभ्यास ग पा को स वै थै छ नृ ॥ उक्ता
 योग को फल प्राप्ति कृ दे नः अनेक उपाधिः एत को प्रकास क न गर्नु ॥ १७ ॥
 अभिवेक यत्रियः चैतने योगी संगर्षित मे ॥ अतीर्त अनागतं निर्मुनि
 विद्यो य स मे द न म् ॥ १८ ॥ ये क्त न भया का अनिर्वचनियः हपी आ
 त्मा को प्रकास जो छ ॥ बीना योग को संगृह न भैः प्रकास कृ दे न ॥ योगी ले मा
 त्र प्रकास कृ छ ॥ तस अर्थ वि सकर्म को त्याग गति ज्ञान योग क मा ला छ

Cms.

5

10

15

20

25

30

25

सक

॥१५॥

अपरोक्षे ज्ञानने स्कनः अवस्ये प्राप्तिं कुरु ॥ अपरोक्ष ज्ञान प्रकाशमा ज्ञो ह्यः
 सकलज्ञानको मोक्षे मार्गको बोधकृत् न जीह्य ॥ सकलः भूतिविसेयकल्पना
 को नास भोः चैतने बुद्धिज्ञाने मालयदृक् कुरु न जीह्य ॥ अहकर्मसर्वे निश्चय
 मो दैनः स्वप्ने हे कुरु न जीह्य ॥ तव बुद्धिचैतन्य प्रकाशकुरु न जीह्य ॥ आन
 दपाई भुने पदको पति अनभवः पाया को कुरु ॥ वीना अपरोक्षज्ञानले
 द्वितबुधी कसरी ना सहो ला कुरु दैन ॥ १७ ॥ अज्ञपा ज्ञानमात्रे न साधुना मोक्षे
 दायनि ॥ अज्ञपा ज्ञानहिने न योगसिपतने भवेत् ॥ १८ ॥ अहजो जतिकर्म
 सो कर्मसर्वे निष्फल कुरु पुमान् केहि तात्पर्ये देखा नुन सकिने ॥ यसो गर्भ
 ने लेखी गया का वमोजी भूगए डीने कामुमात्री कुरु निस्सा केहि न देनै भू
 वा

॥१६॥

15

10

मात्र

तिकैले न कृतिने माया जाल कुरु भनि जा निः ॥ साधु ज्ञानि जन ह ह ज्ञो ह्य अज्ञपा
 के ज्ञाने ले मुक्त कुरु ना कन जीह्य ॥ अज्ञपा को ज्ञान लाई योग कहिं ह्य ॥
 अज्ञपा ज्ञानले हि न भया का ह ह ले सकल कर्म गरी स को स्तापनिः सकर्मपा
 गो स्तापनिः ज्ञानले हि न भया का कुरु न ले अवस्ये योगसिमे गीर्न जीह्य ॥
 अहकर्मले पारतर्कु नै श्वै सक देन भनि सिव आ ज्ञा गद्य नु कि ॥ अज्ञपा
 ले कर्म योग वता उद्य नु ॥ अज्ञपा ज्ञानले के वले मुक्ती पदको सीखे यो
 ग वता उद्य नु ॥ तस अर्थ ॥ अज्ञपा अज्ञपा ज्ञानमा पनिः भेद भे गया का
 छ नु ॥ अज्ञपा कुरु जगते छ नु ॥ अज्ञपा ज्ञान कुरु ~~मात्र~~ डले भद्य नु ॥
 कोटि माय कुरु ॥ अज्ञपा लाई रो कने ज्ञो ह्य ते सै लाई अज्ञपा ज्ञान भद्य नु ॥ भावार्थ

0

cms.

5

10

15

20

25

30

25

योद्धकिः अजपाकाज्ञानलेहिनभयाकाहहचौरसिर्जीछन॥ अजपाज्ञानमाअ
 भ्यासगर्नेहहकैवल्पमुक्तींछन॥ १८॥ अजकौलः वहिर्सेवजनमधोलुवे
 शावी॥ कौलसंशोपेमेदेविः नारीकल्पेफलस्युवत॥ १९॥ भिन्नगुप्तेः कौल
 ॥ १९॥ मार्गमारहनु॥ वालेजोद्धसिवमार्गधारनागनु॥ जनहहभयाकाथानमा
 वैशावमार्गमावधुः॥ कौलमार्गअतिगोपेगनुजोगेछ॥ जसैनरीवल
 भिन्नकादुदः गुप्तेरह्याहेतसो॥ १९॥ सत्तुसैवित्येसैवतिः सर्वपापपु
 मुच्येत॥ औस्वर्गफलनेहधीज्ञानयोगअतारकम्॥ २०॥ जसैसतगु
 हलाईचिनिनित्यसेवनगर्हतस्कोअधिकोपापसवैनासभैः अकासमातृ
 योगसिद्धिफलप्राप्तेः॥ जसैनाउलेसमुदरतारिदिछ॥ तसैः सतगुहले

15

10

5

जसमर्नादिहपीअघोरसागरवाटः हेलेलेगरीपारतारिदिछ॥ २०॥ विषय
 युक्तसंप्राप्तोः विनाअमलम्बनहर्त॥ विजयामृतयोगीचः महत्वादिभ
 योमनम्॥ २१॥ विसयकोवासनालेचंचलभयाकामनलाई॥ विनाअमल
 वनमुन्दानगएवसक्रुदेन॥ मनवसनभैकोमैः कर्मसिद्धीछेन॥ तसअर्थ॥
 विजयामृतकोसंयोगगर्नाले॥ जसैचंचलहपः पाएलाईः गंधकलेः सम
 गरीडीछः॥ तसैचंचलहमनलाईः सातकनगछन॥ मैनपवनः जीदि
 यहहसवैः विलयक्रुनाकनजीछन॥ योमसिद्धीछेन॥ २१॥ चलेवाटेः
 चलेचिर्निश्चलेनिश्चलंभवेत्॥ योस्थानुत्तमापोमिजतोवायुमि
 रोधयत्॥ २२॥ प्राणवायुचल्पासंमः मनपानिः कल्पनामाचलिनैरहछ॥

0

cms.

5

10

15

20

25

30

25

15

10

5

0

॥१२॥

प्राणवायुलाईनिश्चल गतिरेक नुसक्याः मनपनि अचल कुना कन जी छ नृ ॥
 एका गुचित ई छ मनः को एका गुभया पछि अहर्गर्ने वा कि क्वा छ ॥ म स्थिर
 भया पछि आत्मा जो टि आफै पुका स ई छ ॥ आफै मन वस गनु न सकि न्या लेः
 अह लाई वस क स गी गली रु दे नः त स अर्थः मनः पवनः व स रु न्या त त्व ज्ञान
 ज ज्ञे ई छ नृः माहा गु हति ने रु नृः ॥ अह माहा मंत्रा दि दि न्या गु हता ज
 ग तै छ नृ व रु तै छ नृः मन पवनः व स रु न्याः स ही न क भ क मु द्रा दि न्या
 गु ह व रु त दु र्भ नृ भ नि सि व ले आ ज्ञा भ या का ज्ञान जो छ ॥ स्वा मि रा मा
 नंद ले पु का स गी दि डा भ या ॥ २२ ॥ इति श्री रामानंद स्वामि चरित विज्ञ
 या मृत योग ज्ञान ॥ ॥ सम्वत् १९७४ साल भावडी ३० गे इ मा सिद्ध भया का ॥

Cms.

5

10

15

20

25

30